मर गये तब फिर भी सबकी लोथें वह ब्राह्मण उग्रसेन के द्वारे रख आया और अनेक दुर्वाक्य उग्रसेन को कहे पुनः नवें बालक की रक्षा का प्रण अर्जुन ने किया परन्तु रक्षा न हो सकी तब अर्जुन अग्नि में जलने को उद्यत भये उस समय कृष्ण जी ने विष्णुलोक से ८ पुत्र उस ब्राह्मण को लाकर दिये बालकों को देखते ही विप्र अति प्रसन्न हुआ तब अर्जुन ने एक पुत्र ब्राह्मण से मांग लिया और पालन करने लगे तथा उस ब्राह्मण के पुत्र का नाम कृष्णानन्द रखा तो कृष्ण जी ने अर्जुन से कहा हे अर्जुन ! जो तुमने इस बालक का नाम कृष्णानंद रक्खा है तो मैं भी तुम्हारे नाम से इसका धनञ्जय गोत्र नियत करता हूं पुनः कुछ दिनों में वह पुत्र बड़ा हुआ तब कृष्ण और अर्जुन ने उसका यज्ञोपवीत कराय सन्दीपन से विद्याध्ययन कराया कालातर में वह बालक पढ़कर परम विद्वान हुआ और उसी कृष्णानन्द के कुल में पुष्करानन्द पुष्पानन्द अत्यन्त प्रवीण भये सो पुष्पानन्द नानपारा के तिवारी कहाये, तिनके ४ पुत्र पहिले पुत्र रामशरण नौगंजा के तिवारी कहाये दूसरे पत्र शिवशरण बिहटा के तिवारी तीसरे पुत्र

हरिभजन कचौरा के तिवारी, चौथे शिवभजन शृङ्गपुर के तिवारी कहाये रामशरण के २ पुत्र १ सुरेश्वर मन्मथारिपुर के दीक्षित, २ गृहपति चरखारी के अवस्थी कहाये हरिभजन के १ पुत्र शिवशङ्कर पाली के अवस्थी शिवभजन के २ पुत्र १ कलानिधि तिलसरा के अवस्थी ध्रुवनैन अम्बरसर के अवस्थी शिवशरण के २ पुत्र १ गिरधारी सुन्दरपुर के दुबे यज्ञपति यज्ञपुर के अवस्थी कहाये।

❀ इति ❀

—:❀:—

धनञ्जय गोत्रतिवारीदीक्षितोंका स्थान असामी विस्वा

स्थान	असामी	विस्वा	स्थान	असामी	विस्वा
नानपारा के (तिवारी) पुष्पानन्द		३	बिहटा के शिवशरण		३
नौगंजा के रामशरण		३	कचौरा के हरिभजन		३
			शृङ्गपुर के शिवभजन		३

धनञ्जय गोत्र दीक्षित

स्थान	असामी	विस्वा
मन्मथारिपुर के	सुरेश्वर	२

धनञ्जय गोत्र अवस्थी

स्थान	असामी	विस्वा
चरखारी के	ग्रहपति	२
पाली के	शिवशङ्कर	२
तिलसरा के	कलानिधि	२
यज्ञपुर के	अवस्थी यज्ञपति	२
अम्बरसर के	घृतनयन	२

धनञ्जय गोत्र दुबे

स्थान	असामी	विस्वा
सुन्दरपुर के	गिरधारी	२

❀ इति धनञ्जय गोत्रम् ❀

काश्यप गोत्रस्य वृत्तांतम्

प्राचीन ब्रह्मपद्धतियों द्वारा विदित हुआ है कि सम्वत् १५८४ में मदारपुर के ज़मींदार भुंइहार ब्राह्मणों से और यवनों से घोर युद्ध हुआ अन्त में सब ब्राह्मण लड़ कट कर समाप्त हो गये केवल अनन्तराम विप्र की गर्भवती स्त्री बची वह यवनों से डर कर स्योना नाई के सङ्ग उसकी ससुराल में जाय रहने लगी पूरे दिन होने में उसके १ पुत्र भया और वह स्त्री परम धाम को गई निदान स्योना ने ब्राह्मण से क्रिया करा दी और द्विज कुलानुसार जातक